राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में पितृसत्तात्मक समाज की मानसिकता और स्त्री पात्र

अँचल कुमारी
शोधार्थिनी, हिंदी विभाग,
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

स्त्री व पुरूष इस सामाजिक संरचना के आधार स्तम्भ है। नर व नारी एक दूसरे के पूरक हैं और एक दूसरे से भिन्न भी हैं। नारी का मुख्य कार्य घर–गृहस्थी की बागड़ोर संभालना है तो पुरूष का कार्य घर चलाने हेतु आवश्यक धन जुटाना है लेकिन सामाजिक जीवन में दोनों की अवस्था असमान और असंतुलित है। ऐतिहासिक विकास क्रम में स्त्री की पहचान का लोप हो गया और पहचान के नाम पर सिर्फ शरीर रह गया। जिस पर उसका कोई अधिकार नहीं था। पुरूष की मनोवृत्ति सदैव तानाशाही रखने के लिए वे स्त्री पर अपने आधिपत्य को सुरक्षित रखने के लिए वे स्त्री की सारी प्रवृत्तियों को आचार संहिताओं के अनुसार निर्धारित करते हैं। प्रसिद्ध लेखक **राजकिशोर** स्त्री के विषय में विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि **''भारतीय स्त्री की गुलामी की अदृश्य जंजीरे पुरूष पूँजी और धर्म के हाथों में है।''**[1]

प्रसिद्ध महिला लेखिकाओं में प्रमुख लेखिका **मनीषा** अपनी पुस्तक **'हम सभ्य औरतें'** नामक पुस्तक में अपने विचार प्रस्तुत करती है कि **''वह अवहेलना की पात्र है लेकिन पुत्र अवहेलित होने की वस्तु नहीं इसलिए कन्या को उत्तराधिकार प्राप्त नहीं है जो पुत्र को है।''**[2]

समाज में न नारी का अपना कोई व्यक्तित्व रहा है न जाति। वह एक चीज है जिसे लूटा, छीना या नष्ट किया जा सकता है। स्त्री को मानसिक रूप से कमजोर बनाने के लिए उसे अबला असहाय कहा गया तथा उसे सन्तान उत्पत्ति की मशीन माना गया। मूलतः इस समाज में स्त्री की न अपनी कोई जाति है, न नाम और न अपनी इच्छानुसार नचाया।

मुस्लिम समाज में तो स्त्री की दशा और भी दयनीय है। उसमें पुरूष को तीन विवाह करने की इजाजत है। एक पुरूष उसमें स्त्री को आसानी से तलाक दे सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रारम्भ से ही समाज में स्त्री के प्रति रूढ़ मानसिकता रही है और उसे दोयम दर्जे का प्राणी माना गया है। स्त्री का जीवन आज भी कठिन बंधनों में जकड़ा है। राही ने अपने उपन्यासों में स्त्री की दयनीय दशा को मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी नारी की दशा में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। नारी को पुरूष के समान अधिकार प्राप्त नहीं थे। नारी का सम्पूर्ण जीवन घर–गृहस्थी के कामकाज में निकल जाता था। नारी के प्रति पुरूष का व्यवहार सदैव दोयम दर्जे का रहा है। समाज पुरूष को सभी जगह जाने की छूट देता है लेकिन नारी आज भी अनेक प्रकार के सामाजिक बंधनों से ग्रस्त है। **'दिल एक सादा कागज'** उपन्यास में नारी की दशा को रेखांकित किया गया है– **''मर्द तो मस्जिद और अदालत, कचहरी से लेकर रंडियों के कोठे तक हजार जगह जाते हैं पर औरतें तो जो बहुत निकलें तो सड़क पार करके पड़ोस के घर में चली जाए।''**[3]

पुरूष की मनोवृत्ति सदैव से ही तानाशाही की रही है। स्त्री पर अपने आधिपत्य को सुरक्षित रखने के लिए वे स्त्री की सारी प्रवृत्तियों को आचार–संहिता के अनुसार निर्धारित करते हैं। इसके विरूद्ध आवाज उठाने का अधिकार स्त्री को नहीं है। सभी धर्म व जाति में नारी के साथ सौतेला व्यवहार किया जाता है। नारी को एक जीता–जागता इंसान न मानकर, विलास का उपकरण माना जाता है और पुरूष उसके यौवन से खेलकर आत्म सन्तुष्टि करता है और नारी युग–युग से इस पीड़ा को झेल रही है। एक उदाहरण दृष्टव्य है– **''नफीसा कह रही है, पर खलीक! उस सिखड़े कुलजीत से इश्क लड़ाते तुम्हें शरम नहीं आती? छी! यह हिन्दू व सिख बड़े ही कमीने होते हैं। पता है इन्होंने मुसलमान औरतों के साथ क्या किया है।'' ''औरत हिन्दू हो या मुसलमान! दोनों के साथ मर्द सुलुक एक ही करता है।''**[4]

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी नारी की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। मुस्लिम समाज में नारी की स्थिति और भी दयनीय है। नारी के चरित्र पर जरा–सा शक होने पर पति द्वारा तलाक दे दिया जाता है। तलाक देने के पश्चात् पुरूष तो दूसरा विवाह कर लेता है लेकिन नारी का सम्पूर्ण जीवन कलंकित हो जाता है। उसे आजीवन घुट–घुटकर जीना पड़ता है। **'नीम का पेड़'** उपन्यास में नारी की दयनीय स्थिति का मर्मान्तक चित्रण देखिए (दर्शनीय है)– **''अब चूँकि उन्होंने तलाक की बात कर दी, तो साहब शरीफ घरानों की लड़कियाँ या तो कुँवारी रह जाती है या बेवा हो जाती है . . . तलाक लेकर अपने घर नहीं आती।''**[5]

स्त्री व पुरूष आज भी इस पितृसत्तात्मक समाज में जैविक, सामाजिक, आर्थिक धरातल पर भिन्न है। पुरूष को जो सुविधाएँ उपलब्ध हैं वह इस समाज में स्त्री को सुलभ नहीं है। स्त्री आज भी दलित है, पीड़ित है। आज भी स्त्री को विलास का उपकरण माना जाता है। पुरूष केवल स्त्री को प्यार–मोहब्बत के जाल में फंसाता है और उसके यौवन से खेलकर किनारा कर लेता है या कभी सामाजिक मान–मर्यादा के डर से उसे मृत्यु के घाट उतार देता है। **'नीम का पेड़'** उपन्यास के पात्र सुखीराम का कमलिनी के साथ अवैध संबंध है। जब सुखीराम को लगता है कि अवैध सम्बन्ध के चलते उसकी समाज में बदनामी होगी, तो उसने उसे हटाने का प्लान बनाया। निम्न उदाहरण दर्शनीय है– **''सुखीराम को लाला की याद आई। सुखीराम ने लाला को सारा मामला समझाते हुए कहा कि किसी तरह कमलिनी को पढ़ाकर वह दिल्ली वापस जाने के लिए राजी कर ले और अगर बजरंगी तैयार हो जाए तो रास्ते में उसे इतना डरा–धमका दिया जाए कि दुबारा भूलकर भी मदरसा खुर्द का रूख न करें। इसके लिए बजरंगी चाहे जितना पैसा मांगे उसे दे दिया जाए।''**[6]

आधुनिक युग में भी नारी को भोग्या के रूप में देखा जा जाता है। आधुनिक युग में नारी के प्रति श्रद्धा नहीं है। माँ, पुत्री या बहन नहीं अपितु जीती–जागती हाड़–मास का पिण्ड है। उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है। प्रत्येक युग में पुरूष समाज ने नारी जाति का शोषण किया है। पुरूष नारी को कभी छल से तो कभी बल से प्रताड़ित करता है। समाज में कुछ लोगों की धारणा है कि जिस नेता के जितनी औरतों से सम्बन्ध होते हैं, वह उतना ही अधिक ताकतवर व सफल माना जाता है। एक उदाहरण दृष्टव्य है– **''पार्टी के एक बड़े नेता ने तब भी समझाया था उसे कि जितनी औरतें जिस नेता के पास होती है उतना ही उसको ताकतवर माना जाता है जो एक औरत से बंध जाए वह तो मूरख नेता माना जाता है।''**[7]

लेखक ने स्पष्ट किया है कि नारी को समाज भोग विलास की वस्तु या उपकरण मात्र मानता है। पुरूष नारी के साथ गेंद की भांति खेलता रहता है। पुरूष नारी को खिलौना मात्र समझता है। आजादी के बाद नारी के दशा व दिशा में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ। नारी का शोषण आजादी के पहले व अब तक होता आ रहा है। पुरूष नारी को कठपुतली की भांति नचाता है। यदि पुरूष के पास धन व ताकत है तो वह एक से अधिक पत्नियाँ रख सकता है। ठाकुर साहब और समीउद्दीन खाँ दोनों दोस्त थे अकेले में बैठकर ठाकुर साहब समीउद्दीन खाँ से मजाक करते। एक उद्धरण दृष्टव्य है– **''वाह, यह भी कोई मजहब हुआ कि खुद तो पैगम्बर साहब ने नौ–नौ ब्याह कर डाले आर बाकी मुसलमानों को चार शादियों पर तरका दिया।'' समीउद्दीन तड़ से जवाब देते ''ठाकुर साहब, यह तो कम बूते की बात है। हाँ हजरत ने ऐसी–वैसी हरकतों में अपनी ताकत हमारी तरह लुटायी होती, तो वह भी चार से ज्यादा शादियाँ न करते। अरे साहब, आजकल तो एक को संभालना मुश्किल हो गया है लेकिन पाँच भाईयों में एक बीबी से हमारा काम अब भी चल नहीं सकता। यह भी कोई कमर हुई? उनसे अच्छे तो हमीं है। चार भाईयों में कुल मिलाकर सात बीवियाँ हैं।''**[8]

लेखक ने स्पष्ट किया है कि पुरूष नारी के साथ उचित व्यवहार नहीं करता है। जिस प्रकार एक बच्चा एक खिलौने से मन भर जाने पर दूसरे खिलौने से खेलता है उसी प्रकार पुरूष भी एक नारी से मन भरने पर दूसरी नारी से शादी कर लेता था। लेकिन यह अधिकार नारी को प्राप्त नहीं था।

हमारे भारतीय समाज में नारी की न अपनी कोई जाति है, न नाम, न शोहरत और न ही अपनी कोई इच्छा। हर जाति या नस्ल ने एक–दूसरे की स्त्रियों को लूटा या छीना है। वह पूरे जीवनकाल में किसी की बेटी, किसी की पत्नी और किसी की माँ के रूप में पहचानी जाती है। उसी से उसका पद एवं प्रतिष्ठा बनते हैं। विवाह के पश्चात् नारी के बहू का दर्जा दिया जाता है। उसे घर की लक्ष्मी कहा जाता है लेकिन वास्तविक धरातल पर उसे अनेक प्रकार की यातनाएँ दी जाती हैं। यहाँ तक कि उसका नाम भी बदल दिया जाता है। उन्हें घर के किसी फैसले में शामिल नहीं किया जाता है। वे घर में किसी फटी–पुरानी वस्तु की भांति पड़ी रहती है। इस सम्बन्ध में एक मर्मान्तक उदाहरण दर्शनीय है– **''बनाम रहना शायद जमींदारों और उनके हवालियों–मवालियों की बेटियों की तकदीर है इसलिए ये बनाम लड़कियाँ कंदूरी के फर्श पर बैठने और बिरादरी के दूसरे मामलों में शरीफ होने या न होने की होकर रह जाती है। बस, यही एक ऐसी शरीफ होने या न होने की होकर रह जाती है। बस, यही एक ऐसी इज्जत है, जो किसी रखनी को नहीं मिलती और शायद इसलिए ये शरीफ लड़कियाँ अपनी बेनामी को झेल जाती है।''**[9]

समाज की आधारभूत इकाई व्यक्ति नहीं, परिवार है और परिवार का मूल है– स्त्री पुरूष का युग्म। लेकिन इस समाज में न नारी का अपना कोई व्यक्तित्व है, न जाति। वह एक चीज है जिसे लूटा, छीना या नष्ट किया जा सकता है। भारतीय समाज में सदैव से पुरूष का वर्चस्व रहा है और नारी को सदैव दोयम दर्जे का प्राणी माना गया है। मुस्लिम समाज में जिनके पास खाने को दो वक्त की रोटी नहीं है, वे सभी सामाजिक मान–मर्यादा के लिए दूसरा व तीसरा विवाह करते हैं तथा मुस्लिम समाज में तो नारी की स्थिति अत्यधिक सोचनीय है। **'आधा गाँव'** उपन्यास में राही जी ने नारी की दयनीय स्थिति को रेखांकित किया है– **''दूसरा ब्याह कर लेना या किसी ऐरी–गैरी औरत को घर में डाल लेना बुरा नहीं समझा जाता था, शायद ही मियाँ लोगों का कोई ऐसा खानदान हो, जिसमें कलमी लड़के व लड़कियाँ न हो। जिनके घर में खाने को भी नहीं होता, वे भी किसी न किसी तरह कलमी आमों और कलमी परिवार का शाक पूरा कर ही लेते हैं।''**[10]

कहने का अभिप्राय यह है कि मुस्लिम समाज में बहु–विवाह का प्रचलन था जिससे नारी का जीवन नरक हो रहा था। अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने का अधिकार इस पुरूष सत्तात्मक समाज में स्त्री को नहीं है। औरत को मारना निम्न वर्ग में ही नहीं, बल्कि उच्च एवं मध्य वर्ग के परिवारों में भी एक दिनचर्या की तरह चल रहा है। पुरूष का नारी के प्रति व्यवहार उदार न होकर निष्ठुर रहा है। पुरूष समझता है कि स्त्री को काबू में रख्ने का एक मात्र रास्ता है उसे डांटना और पीटना। पुरूष की इसी मानसिकता के कारण नारी का सदियों से शोषण हो रहा है। हम्माद मियाँ अपनी बीवी को फटकारते हैं। इसका एक उदाहरण दृष्टव्य है– **''तुमने मेरा जीना हराम कर दिया है। तुम्हें क्या जरूरत थी सकीना से टर्राने की, बदतमीज।'' हम्माद मियाँ ने अब तक उसे नहीं डांटा था। वह रोने लगी। आंसू देखकर हम्माद मियां और आग बबूला हो गए।**

''अगर मैं शरीफ बाप का बेटा न होता तो इस वक्त मैं तुम्हारी ऐसी कुंदी करता कि तुम जिंदगी भर याद रखती।''[11]

इस प्रकार पुरूष समय–समय पर नारी को प्रताड़ित करता रहता है। आजादी के लगभग सत्तर वर्षों के पश्चात् भी नारी की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ है। आज भी नारी को भोग–विलास का उपकरण माना जाता है। नारी को अकेला पाकर मनुष्य वासन का जाल फेंकने लगता है। वासना का जाल फेंकते समय पुरूष यह भी भूल जाता है कि सामने वाली स्त्री की उम्र क्या है? **'कटरा–बी–आरजू'** उपन्यास में बिल्लों कपड़े धोने व स्त्री का काम करती है।

बीच–बीच में उसे दुकानदार को पैसे देने जाना पड़ता है तो पैसा देते समय दुकानदार उसका हाथ दबा देता है। एक उदाहरण दर्शनीय है– **''दुकानदार मुस्कुराया और बिल्लों की तरफ जरा सा झुका और बोला– ''आपकी अपनी लॉण्ड्री है?'' बिल्लों सिर हिलाकर फिर रूपये गिनने लगी। ''तो एक दिन हमें भी धो दो।'' दुकानदार ने कहा। बिल्लों ने उसकी तरफ देखा। पी गयी। रूपये बढ़ाकर बोली ''यह लो अपने दौ सौ चालीस।'' रूपये लेने में दुकान ने उसका हाथ जरा सा दबा दिया।''**[12]

लेखक ने स्पष्ट किया है कि नारी को अकेले देखते ही पुरूष के अन्दर का राक्षस जाग उठता है और वह स्त्री को परेशान करना प्रारम्भ कर देता है। वर्तमान युग में भी नारी की स्थिति समाज में सुदृढ़ नहीं हो सकी है। आज भी समाज पुरूष प्रधान ही है। नर व नारी दोनों के मध्य समानता की भावना पूर्ण रूप में विकसित नहीं हुई है। पुरूष समाज में स्त्री को लेकर संकीर्ण विचारधारा सर्वत्र फैली हुई है। पहले पुरूष नारी के यौवन से खेलता है तथा बाद में पोल खुलने पर तरह–तरह के लांछन स्त्री पर लगाता है। **'नीम का पेड़'** उपन्यास में सुधीराम अपनी पत्नी के होते हुए भी कमलिनी से प्रेम सम्बन्ध स्थापित कर लेता है और जब वह अपना अधिकार माँगने पर पहुँचती है तो अनेक प्रकार के बहाने बनाता हे। उक्त उदाहरण दर्शनीय है– **''सुखीराम ने बहाना बनाते हुए कहा– कैसी बात करत हो अम्मा, अपनी देवी जैसी बीबी को छोड़कर दूसरी औरत को दिखे का मतलब? ऊ दिल्ली क एक सेठ की लड़की है। सेठ जी उनका हमरे लगे भोजिन है! सेठ जी एक मिल लगव चाहत है, मिल का परमिट चाहत है। इतने चालाक कि परमिट के बदले अपनी लड़की भेजिन है . . . भगा दिया ससुरी को।''**[13]

राही जी ने पुरूष की मनोवृत्ति पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि पुरूष पहले स्त्री के साथ मौज–मस्ती करता है। तत्पश्चात् सम्बन्धों का खुलासा होने पर तरह–तरह के बहाने बनाता है और नारी की स्थिति एक गेंद की भांति हो जाती है जो इधर से उधर लुढ़कती रहती है। भारतीय नारी आजीवन अपनी पहचान के लिए भटकती है। शादी से पूर्व पिता एवं भाई के ऊपर निर्भर रहती है और शादी के पश्चात् पति पर। आज भी नारी पति व पुत्र पर ही आश्रित है वह स्वाधीन नहीं हुई है। आधुनिक युग में समाज सुधारकों ने स्त्री व पुरूष को समान अधिकार दिलाने के भरसक (बहुत) प्रयत्न किए हैं लेकिन व्यवहार में लाते समय पुरूष की संकीर्ण भावना सामने आ जाती है। समाज में पुरूष पूर्णतः बंधन मुक्त है। सारे बंधन व मर्यादा स्त्री के ऊपर लाद दी गई है। राही सामंती समाज में फैली जाति–पांति और खानदान की ऊँची दीवारों को इसका कारण मानते हैं। **'आधा गाँव'** उपन्यास से एक उद्धरण दर्शनीय है– **''क्योंकि बेनाम होना तो बहुओं की तकदीर है . . . बहू यदि मालदार हुई तो उसे खिताब दिए जाते हैं, अजीज दुल्हन। चाहे ससुराल में उसे कोई मुँह न लगाता हो और नफीस दुल्हन (चाहे वह निहायत फूहड़ हो) . . . गरज कि हमारे समाज में यह होता है कि मैकेवाले दहेज देकर बेटी से अपना दिया हुआ नाम छीन लेते हैं या फिर कहिए के ससुराल वाले इसे गवाना नहीं करते कि उनके यहाँ किसी और घर का दिया हुआ नाम चले।''**[14]

अतः निष्कर्ष निकलकर आता है कि स्त्री राही के साहित्य का अनिवार्य घटक है। उन्होंने सदियों से होते आ रहे नारी पर अत्याचार व शोषण की मुखर अभिव्यक्ति की है। उनके उपन्यासों में नारी की करूण पुकार है और उसका त्रासद इतिहास है और वर्तमान समय में होने वाले अत्याचारों की निर्मम चीखें हैं। अतः राही ने बहुत ही संवेदनशीलता के साथ नारी से सम्बन्ध मुद्दे घरेलू हिंसा, यौन हिंसा, पुरूष की कुत्सित दृष्टि व उसे एक उपभोग व मनोरंजन की वस्तु की पीड़ा का मार्मिक शब्दांकन किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राजकिशोर– स्त्री के लिए जगह, पृ0 111
2. मनीषा– हम सभ्य औरतें, पृ0 195
3. राही मासूम रज़ा– दिल एक सादा कागज, पृ0 31
4. वही, पृ0 80
5. राही मासूम रज़ा– नीम का पेड़, पृ0 16
6. वही, पृ0 49
7. वही, पृ0 70
8. राही मासूम रज़ा– आधा गाँव, पृ0 79
9. वही, पृ0 23
10. वही, पृ0 17
11. वही, पृ0 182
12. राही मासूम रज़ा– कटरा–बी–आरजू, पृ0 55
13. राही मासूम रज़ा– नीम का पेड़, पृ0 49
14. राही मासूम रज़ा– आधा गाँव, पृ0 23